झगड़ा पंचक

खेमराज
श्रीकृष्णदास
प्रकाशन

॥ श्रीः ॥

झगड़ापंचक।

(अर्थात्)

१–बुड्ढे जवानका, २–दन्त जिह्वाका, ३–लम्बे ठिगनेका, ४–मोटे पतलेका, ५–स्त्री पुरुषका झगड़ा।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई – ४०० ००४.

मूल्य ३ रुपये मात्र

भूमिका ।

इस मनोहर झगड़ापंचकको बेथर निवासी पण्डित परमात्मादीन पाँडे और पण्डित राम-भजन मिश्र तथा पण्डित हीरालाल मास्टरने सज्जनोंके अनुरागार्थ रचा और श्रीपं० शिवरतन वाजपेयी द्वारा प्राप्त हुआ जिसे हमने सर्व साधारणलोगोंके लाभार्थ प्रकाशित किया ।

रसिक गणोंके शुभचिन्तक–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

'श्रीवेङ्कटेश्वर'' स्टीम्–प्रेस, बम्बई.

ॐ तत्सत्

अथ झगड़ापंचक ।

बुड्ढे जवानका झगड़ा ।

कुण्डलिया ।

प्रभु माया या जक्तमें रही कौन विधि छाय ।
जासों मद अरु लोभमें सबही रहे भुलाय ॥
सबही रहे भुलाय एक एकहि धमकावै ।
करि सबको अपमान आपनो मान बढ़ावै ॥
रामभजन करि ध्यान जक्तको बहुविधि देखा ।
अभिमानी नर छोडि साधु कोइ बिरलेपेखा ॥१॥
कोई काहू सो लड़ै करै कहूँ कोउ रारि ।
गौरव सब अपनो चहैं फिरि को मानै हारि ॥
फिरिको मानै हारि क्षणहिं क्षण बढ़ै लड़ाई ।
यही विषयपर बहुत पुस्तकैं कविन बनाई ॥
रामभजन यक और नई तकरार नबीनी ।

भूमिका ।

इस मनोहर झगड़ापंचकको बेथर निवासी पण्डित परमात्मादीन पाँडे और पण्डित राम-भजन मिश्र तथा पण्डित हीरालाल मास्टरने सज्जनोंके अनुरागार्थ रचा और श्रीपं० शिवरतन वाजपेयी द्वारा प्राप्त हुआ जिसे हमने सर्व साधारणलोगोंके लाभार्थ प्रकाशित किया ।

रसिक गणोंके शुभचिन्तक–

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

ॐ तत्सत्

अथ झगड़ापंचक ।

बुड्ढे जवानका झगड़ा ।

कुण्डलिया ।

प्रभु माया या जक्तमें रही कौन विधि छाय ।
जासों मद अरु लोभमें सबही रहे भुलाय ॥
सबही रहे भुलाय एक एकहि धमकावै ।
करि सबको अपमान आपनो मान बढ़ावै ॥
रामभजन करि ध्यान जक्तको बहुविधि देखा ।
अभिमानी नर छोडि साधु कोइ बिरलेपेखा ॥१॥
कोई काहू सो लड़ै करै कहूँ कोउ रारि ।
गौरव सब अपनो चहैं फिरि को मानै हारि ॥
फिरिको मानै हारि क्षणहिं क्षण बढ़ै लड़ाई ।
यही विषयपर बहुत पुस्तकैं कविन बनाई ॥
रामभजन यक और नई तकरार नबीनी ।

मित्रनको मन मुदित करनहित जाहिर कीनी ॥२॥
सुनौ जौन विधिसों भई तरुण वृद्धसों जंग ।
दोनों योद्धा रण चढ़े किये निराला ढंग ॥
किये निराला ढंग तरुणने खड्ग उठायो ।
क्रोधवन्त ह्वै वृद्ध लट्ठ लै मारन धायो ॥
रामभजन मिलि कियो दुहुनने अद्भुत दंगा ।
ईश्वर राखै किसे देखिये रणमें चंगा ॥ ३ ॥
इतै तरुण तन सोहही ज्यों तरकसको बान ।
उतै वृद्धकी छबि जुदी टेढ़ी पीठ कमान ॥
टेढ़ी पीठ कमान टेढ़ तन खड़ा टेढ़ावै ।
उत निशानसा खड़ा तरुण निज अकड़ देखावै ॥
रामभजन उन्मत्त दोऊ तहँ युद्धहि ठानहिं ।
दोमें कोऊ हारि जीति बिन लड़े न मानहिं॥४॥

तरुण ।

क्रोधवन्त ह्वै तरुणने कह्यो वृद्धसों बैन ।
शीघ्र भागिजा है तुझे इसी बात सों चैन ॥
इसी बातसों चैन मैं जो निज बलहिं सम्हारौं ।

सुदृढ़ वृक्ष नगराज आज जड़ सहित उखारौं ॥
रामभजन कारि सकै नहीं कोऊ समता मेरी।
बुड्ढे जा तू भागि कुशल इसमें है तैरी ॥ ५ ॥

वृद्ध।

यों सुनि वृद्ध सरोष है उठ्यो तरुण सों बोलि।
पौरुष हो तो युद्ध करु नतरु अस्त्र धरु खोलि ॥
नतरु अस्त्र धरु खोलि वृथा मत गाल फुलावे।
गीदड भभकी एक काम तेरी नहिं आवे ॥
रामभजन रण जुरै आजु बल तुम्हें दिखाऊँ।
करौं पराजय तोहिं जक्तमें जय यश पाऊँ ॥६॥

तरुण।

यह अभिलाषा मत करौ मत होवो मगरूर।
हम हैं योद्धा क्षणकमें कारि हैं तुमको चूर ॥
कारि हैं तुमको चूर चहै जितने मिलि आवो।
चींटीकीसी पंक्ति निमिषमहँ सब बिललावो ॥
रामभजन हम करैं फोरि पर्वत सम राई।

खड़ा सिंह सम काह तुम्हैं नहिं परत दिखाई ॥७॥

वृद्ध ।

बार बार जो बकत हो अपने गर्व भुलाय ।
तौ अब आवो सामने तुर्त न्याय होजाय ॥
तुर्त न्याय होजाय यदपि हममें बल नाहीं ।
तदपि तुम्हारे हाड़ मसौढन दाबि चबाहीं ॥
रामभजन कछु अबै भई है नाहिं बुराई ।
तरुण भागिजा गेह इसीमें समुझि भलाई ॥८॥

तरुण ।

बहुत दिननको तू भया रहा न तनको जोर ।
ठोकर खाते ही गिरै ज्यों ककरीको चोर ॥
ज्यों ककरीको चोर युद्धमें मोहिं न शंका ।
यही खेदकी बात लगैगो व्यर्थ कलंका ॥
रामभजन गये जानि बुद्धि तेरी सठियाई ।
भगिबेमें लखि कुशल बुढ़ौनू जाउ पराई ॥ ९ ॥

वृद्ध ।

यदपि पुराने हम भये तुम हो निपट जवान ।
सौ दिन रहते हैं नये सौ दिन रहत पुरान ॥

सौ दिन रहत पुरान जोर है बाढ़ा तोरे ।
पै हम छोड़ैं नहीं कान बिन तोर मिरोरे ॥
रामभजन है धूम तरुण तुम बहुत मचाई ।
अब नहिं छोडो तुझे बिना कुछ दिये सजाई ॥१०

तरुण ।

तुममें ऐसो बल नहीं मोर मिरोरो कान ।
नहीं तुम्हारे पास हैं भाला तेग कमान ॥
भाला तेग कमान पलकमें धरि फटकारौं ।
बाल बाल एक घरी बीचमें सभी बिखारौं ॥
डाढ़ी डरिहौं नोच जौनि तुम हवौ बढ़ाई ।
बक बक करता वृद्ध मौत तेरी है आई ॥ ११ ॥

वृद्ध ।

सुनौ तरुण जड़ यदपि तुम दीखत सदृश पहाड़ ।
हम भी होगये सूखि ज्यों झड़बेरीको झाड़ ॥
झड़बेरीको झाड़ लपटि कै बसतर फारौं ।
तीख है जो ताव मोछ सो तेरी उखारौं ॥

मुख दिखलावन योग्य ज्वान तुम फिरि ना रैहौ ।
भागिजाउ नहिं व्यर्थ जक्तमें नाम धरै हौ ॥१२॥

तरुण ।

सुनौ वृद्ध तुम मत बहुत व्यर्थ बनावो बात ।
जो हम तुम्हरी कमरमां हुमकि मारिहैं लात ॥
हुमकि मारिहैं लात हाथ शिर पांव कहीं हों ।
अलग दुपट्टा गिरै पागड़ी अलग कहीं हों ॥
जाको समुझत बात हर्षकी मनमें भारी ।
वह बेशर्मी हवै जिन्दगी सभी तुम्हारी ॥ १३ ॥

वृद्ध ।

तरुण जौन कछु तुम कह्यो सो है सारा व्यर्थ ।
अब कछु मेरी बातको समुझि सोचियो अर्थ ॥
पीते ही उड़ि चलै नशा नहिं छिपी कहानी ।
चावल खाय पुरान स्वाद दे अधिक देखाई ॥
जरा सुखद है मसल नहीं हम नई बनाई ॥ १४ ॥

तरुण ।

वृद्ध व्यर्थ सब तुम बकत सुनौ हमारी बात ।
तरुण वृद्धको युद्धमें निश्चय देते मात ॥
निश्चय देते मात जहां हों तरुण सिपाही ।
अस्त्र शस्त्र सब नये विजय गिनिये दिशिताही ॥
काज परे पर नहीं वृद्धको पूछत कोई ।
विजय तरुणकी और पराजय वृद्धहि होई ॥१५॥

वृद्ध ।

तरुण चार ही दिन करत तुम हरेककी चाह ।
जहां होचुके बस वही फिर हो हाल तवाह ॥
फिरि हो हाल तवाह उमर भर हमीं निबाहत ।
सहत विपति दुख द्वन्द तदपि वाको अतिचाहत॥
राम भजन विश्वास हमारो सबही करहीं ।
दगाबाज हैं तरुण देखि तुमको सब जरहीं॥१६॥

तरुण

वचन पूर्ण तुम करत हौ हम करते हैं नाहिं ।
तदपि बहुत आनंद है मम अपूर्तिके माहिं ॥

मम अपूर्तिके माहिं मजे नित नये उठावैं ।
घरिहू की है राज्य नीकि सब यही बतावैं ॥
लिये स्वाद सब चाखि यदपि फिर दुःखहि होई।
बुड्ढे तुमको भला जगतमें कहत न कोई ॥१७॥

वृद्ध ।

कह्यो वृद्ध वह वृद्धि ही आवै कौने काम ।
धड़क न्यूनताकी जहां रहै आठहू याम ॥
रहै आठहू याम मिली वह हमैं बड़ाई ।
जबतक है मम संग खुशी से रहैं सदाई ॥
रामभजन जो तरुण कभी नहीं सम्पति पाई ।
सोई अनघटनीय ऋद्धि दियो त्रिभुवनराई ॥१८॥

तरुण ।

सभी हमारे हेत हैं नाच रंग गुलजार ।
मद्य नाच रमणी सहित वस्त्राभूषण हार ॥
वस्त्राभूषण हार अनादर जग में तेरा ।
जहां जात तहँ होत सदा है आदर मेरा ॥

याते मानौ हारि व्यर्थ तकरार न कीजै ।
हमी बड़े हैं सदा हमैं उठि आसन दीजै ॥१९॥

वृद्ध ।

तरुण व्यर्थ बातैं करत लाज शरम नाहिं तोहिं ।
बनत बड़ा निज मुखहिते छोट बनावत मोहिं ॥
छोट बनावत मोहिं जहां पर बुड्ढे जावैं ।
सभी तरुण उठि तिन्हैं आय निज मस्तक नावैं ॥
देख सभा दर्बार महफिलैं मजलिस सारी ।
मूढ तरुण कहँ होति नहीं आबरू हमारी ॥२०॥

तरुण ।

ईश्वर वह दर्जा दियो जहां आजु मैं जाउँ ।
तहां हर्षयुत पान अरु रंग फूल सब पाउँ ॥
रंग फूल सब पाउँ बढै आबरू हमारी ।
लिपटै गलबिच चन्द्रमुखी पिकबयनी नारी ॥
बाल वृद्ध नर नारि चाह करि निकट बुलावैं ।
वृद्ध मूर्ख तोहिं देखि दूरिहीते दुरियावैं ॥२१॥

वृद्ध ।

प्राण निछावरि जाहिपर करत सदा तुम जाय ।
पायँ हमारे परत ते देखी दूरिते धाय ॥
देखि दूरिते धाय हमैं बाबा सब कहते ।
अरे अबे कहैं तुम्हैं सदा तुम सोई सहते ॥
घूंसे लात चपेट मुष्टिका तुम बहु खाई ।
भला बताओ हमैं मार कहँ हमने पाई ॥ २२ ॥

तरुण ।

मारे मारे फिरत तुम वृद्ध जाहिके हेत ।
हमको घर बैठे मिलत सोई हर्ष समेत ॥
सोई हर्ष समेत आय आनन्द बढावत ।
प्रमुदित ह्वै निश्शंक सदा हम ऐश मनावत ॥
बैठ निज घर माहिं खुशी सों समय बिताते ।
कहु बुड्ढे जड तोहि ढंग भी ऐसे आते ॥२३॥

वृद्ध ।

जो तुमको हैं कचरते ऊपर धर धर लात ।
पार उतारत हम तिन्हैं देकर दमकी बात ॥

देकर दमकी बात रात्रि दिन मजा उडाते ।
तरुण जासुके नहीं दरश सपनेहुमें पाते ॥
जौन रीतिसों वृद्ध मित्र सों करते प्रीती ।
ताकी कबहूँ मूर्ख तरुण नहिं जानत रीती ॥२४॥
देखो सब पुस्तकन में कैसा कियो बखान ।
जहां देखो तहँ ही लिखो वृद्ध पुरुषको मान ॥
वृद्ध पुरुषको मान प्रतिष्ठा अदब बडाई ।
जहां तरुणकी बात कहूँ पुस्तक में आई ॥
तहां मूर्ख बंगूच छोडि पदवी नहिं दीन्हीं ।
तजि अपमान न आन तरुणकी इज्जत कीन्हीं२५

तरुण ।

त्यागौ अपनी बकबकी मानौ मेरी बात ।
लज्जा करु मरु बूड़ि जड़ बुड्ढे निर्बलगात ॥
बुड्ढे निर्बलगात होति नित निन्दा तेरी ।
तदपि न मानत बात करत तू समता मेरी ॥
बुढ़ऊ जावो सरवि नहीं तौ मारे जैहौ ।
सोचि सोचि करतूति अपनी फिरिपछितैहौ२६॥

निन्दित वार्ता सुनि उठ्यो बुड्ढ़ा तुर्त रिसाय ।
लपट्यो आय शरीरमें तरुण पुरुषके धाय ॥
तरुण पुरुषके धाय मिरोरी मोछैं वाकी ।
ज्वानहुँ नोची क्रुद्ध भये पर दाढी ताकी ॥
जोर शोर करि कियो दुहुन जब रारि लडाई ।
यारौ दौडो मदद करौ यही मची हाई ॥ २७ ॥
हँसत हजारौ आदमी लखिलखि युद्धविधान ।
कबहुँ पछाडै वृद्धअरु कबहुँ पछाडै ज्वान ।
कबहुँ पछाडै ज्वान कबहुँ दोउ कपडे फारैं ।
कबहुँ क्रुद्ध ह्वै चपत मुष्टिका लात प्रहारैं ।
रामभजन लखि युद्ध सभीने अचरज माना ।
कहैं परस्पर चकित काह इन मनमें ठाना २८॥
आयो यक चातुर कोई लखि अपूर्व संग्राम ।
ह्वै मध्यस्थ दियो तहाँ दूनन को विश्राम ॥
दूनन को विश्राम मिटायो रारि लडाई ।
रखौ परस्पर मेल त्यागि ईर्षा कुटिलाई ॥

रामभजन किय ईश सबल निर्बल सम दोऊ ।
ताते सबते प्रीति रखौ मत निदरहु कोऊ॥२९॥
उत्पन एकहि बीज से भयो सकल संसार ।
एकहि माता पिता सों प्रगटे पुत्र अपार ॥
प्रगटे पुत्र अपार परस्पर सब ही रहहीं ॥
दुखदायक कटुवाक्य उचित नहिं काहुहिकहहीं॥
करौ परस्पर प्रीति रीति उत्तम प्रतिपालौ ।
रामभजनगहि ऐक्यचित्तते फूट निकालौ ॥३०॥

दन्त जिह्वाका झगड़ा ।



दोहा–झगड़ादन्तजबानका,जाविधिभयोविचित्र
वर्णत ताहि सविस्तर, ध्यान दीजिये मित्र ॥१॥

दन्त । (शेर)

कुछ सोचसाच दन्तौं ने मन में विचारिकै ।
जिह्वासों बोल्यो पौरुष अपनो सम्हारिकै ॥ १ ॥
ईश्वर ने देह माहिं जिते अङ्ग बनाया ।

सबसे है अधिक मान हमाराही बढाया ॥ २ ॥
हैं नाक कान आंख भुजा अंग घनेरे।
सब मोसे कम है कोई नहीं सम हवै मेरे ॥ ३ ॥
हमको ही बडा श्रेष्ठ सदा मुख से कहना।
जिह्वा जो चाहती है कुशलक्षेमसों रहना ॥ ४ ॥

जिह्वा।

जिह्वाको सुन यह बात बहुत क्रोध तब आया।
अत्यन्त क्रोधवन्त है दन्तोंको सुनाया ॥ १ ॥
ईश्वरने हर लिया है सभी बुद्धि तुम्हारी।
सर्वत्र होति याहीसों नित तुम्हारी ख्वारी ॥ २ ॥
अपनेही मुखसे आप मियां मिट्ठू बनते हो ॥
नहीं अपने समान किसीको भी गिनतेहो ॥ ३ ॥
पूछौ तो क़िसी वृद्ध या कोई जवान को ॥
सब अंगौं बीच श्रेष्ठ बतैहैं जबाना को ॥ ४ ॥

दन्त।

जैसी है ओछी बुद्धि त्यों उत्तर हमैं दिया।
रञ्चक विचार तुमने न मनसें कभी किया ॥ १ ॥

खाने की बस्तु लेकै प्रथम हम चबाते हैं।
यहि तोड़ि फोड़ि पीसि मुलायम बनाते हैं ॥२॥
लडकौंके मुहमें दांत नहीं जबतक आते हैं।
खानेको तरसते हैं सभी दुख उठाते हैं ॥ ३ ॥
हैं दन्त हीन बृद्ध कुरूपी दिखाते हैं।
हैं दन्त श्रेष्ठ दन्तौं से सब शोभा पाते हैं ॥४॥

जिह्वा।

जो जैसा है सो तैसा ही करता गुमान है।
कहता है सब जहान हमारे समान है ॥ १ ॥
हौ मूर्ख तुम इसीसे तुम्हें यह यकीन है।
मेरी तरहसे जक्त सभी बुद्धि हीन है ॥ २ ॥
रस खाय स्वाद वस्तु सभीका बताया है।
रसना रसज्ञ नाम इसीसे मैं पाया है ॥ ३ ॥
जीवन भी देहधारी का जिह्वा अधीन है।
है दीन हीन सबमें जो रसना विहीन है ॥ ४ ॥

दन्त।

री जिह्वा मूर्ख सुन तो जरा बात हमारी।

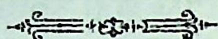
हमहीं सदैव चौकसी करते हैं तिहारी ॥ १ ॥
खाना जो आया तोड़के तुझको खिलाते हैं।
पानी पिला तुझे हमीं हरदम जिलाते हैं ॥ २ ॥
है दांत काढ़ि काढ़ि के सब चीज ले आते।
रक्षार्थ तुम्हारे सभी तुमको हैं खिलाते ॥ ३ ॥
करि हौ जो हमसे वैर तो हम काट डालैंगे।
यक पलमें तुझको मुँहके हम बाहर निकालैंगे॥४॥

जिह्वा।

बक बकके सिर न खावो जरा देर चुप रहो।
बकवादी मूर्ख दन्तौ जरा मौनता गहो ॥ १ ॥
मेरे ही सबब मुँहमें सदा तुम बहाल हो।
हमसे ही इस तरहसे बजाते जो गाल हो ॥२॥
हम जब चहैं निकाल तुम्हैं दूरि बहावैं।
काहू को एक गाली कड़ी जब कि सुनावैं ॥३॥
थप्पड़ लगावै जब तो गिरौ झरझरायकै।
रह जावोगे तब अपना सा तुम मुँह लगायकै॥४
तब ज्ञान मध्य आय उन दोनों को बचाया।

वादानुवाद तर्क वितर्कादि मिटाया ॥ १ ॥
हिरदय में जो भरा सदा रहता यह ज्ञान है।
उस कोष आन्तरिककी यह चाभी जबान है॥२॥
बदनाम नेकनाम जो जग में कहाते हैं।
निन्दा प्रशंसा आदि इसीसे वो पाते हैं ॥ ३ ॥
कहै रामभजन यथार्थ में जिह्वा महान है।
नहीं अंग दूसरा कोई याके समान है ॥ ४ ॥
लिक्खा समस्ती झगडेका इस जा पै सार है।
अंगों में श्रेष्ठ जिह्वा केवल शुमार है ॥ १ ॥
कहनेका समय पावो तभी मुँह को खोलना।
प्रिय सत्य बात होवै वही सबसे बोलना ॥ २ ॥
कहिये न ऐसी बात जो जीवहि कलेश दे।
झूठी हो सबको प्रिय हो न कहना कभी उसे॥३॥
पूछेपै कहिये अर्द्धको हरगिज न काटिये।
उत्तर में प्रश्नके न कभी मग्ज चाटिये ॥ ४ ॥
दो कान जिह्वा एक है दो सुनके बात एक।
ठाकुर बिचारि कहिय यही सज्जनोंकीटेक॥ ५ ॥

लम्बे ठिगनेका झगडा।



कुण्डलिया।

लम्बे ठिगने दोउजन उँचे चौतरा बैठि।
एक दूसरेते कहन लागे बातें ऐंठि॥
लागे बातें ऐंठि कहे फिर हँसिकै ठिगना।
लम्बे होयँ गँवार तकैं असमानी तकना॥
कहते हीरालाल डाटके लायक खम्बे।
झुके कमर बेडौल कहाते अहमक लम्बे॥ १॥

लम्बा।

लम्बा तब हँसिकै कहै क्यों ठिंगना मस्तान।
बातैं करै सम्हारिकै तूही बडा सयान॥
तूही बडा सयान लोग सब कहते मसला।
छोटा सो बड खोट अन्तमें जावे कचला॥
कहते हीरालाल कुटाई है बड धब्बा।
अच्छा वही मकान होय जो चौडा लम्बा॥ २॥

ठिगना।

ठिगना तब तिनगा बहुत बोला भौंह जढ़ाय ।
हमैं न जानतहै अबे बलि पाताल पठाय ॥
बलि पाताल पठाय अरे सुनतो लँबटंगा ।
बातै ऊट पटांग बकै तू है बे ढंगा ॥
कहते हीरालाल बहादुर होते भुनगा ।
कानेमें गुहराय काट खाते कस ठिगना ॥ ३ ॥

लम्बा।

तब तो लम्बा कोपकरि बोला बचन कठोर ।
लगी मुटाई है बहुत नहिं जानत मम जोर ॥
नहिं जानत मम जोर चापि पञ्जेते लेऊँ ।
फटकि फटकि मरिजाउं कबौं नहिं जानेदेऊं ॥
कहते हीरालाल भला फिर बोले अब तो ।
देखिहै मेरो बूत मूत मरिहै फिर तब तो ॥४॥
ठिगना–राते नैन दिखायकै गर्दन तिरछी कीन ।
दांतन ओठ चबाय फिर छोटे उत्तर दीन ॥
छोटे उत्तर दीन कह्यो अस तीखे बैना ।

बड़े बहादुर बने हऊ तुम मोर चबैना ॥
भाषत हीरालाल लंबाई पर हो माते ।
मारौ झोंका एक परौ भुइमां हहराते ॥ ५ ॥

लम्बा ।

बोला तब लम्बा डपटि हमैं दिखावै घींच ।
अपने मनमें बीर बनु कहत सबैं तुहिं नीच ॥
कहत सबैं तुहिं नीच बडाई तुम खो बैठे ।
तापर तनक न लाज नहक फिर जाते ऐंठे ॥
कहते हीरालाल सुनत तुरतै मुँह खोला ।
गरजि तरजिभहराय तमकि ठिगना फिरबोला ६

ठिगना ।

कब लम्बेकी है कदर बडा पतीला सोय ।
डग्गर मारो जात है जौ लम्बा बड होय ॥
जो लम्बा बड होय बात लम्बी नहिं भावे ।
लम्बी नाक कुरूप हँसी जगमें करवावे ॥
कहते हीरालाल ररा रंडासिरसा सब ।
लम्बे तो हैं बडे कदर होती इनकी कब ॥ ७ ॥

लम्बा ।

भटकैं हम तोको नहीं मति बौरानी तेरि ।
स्वांग तमाशे भीड़ मुहँ देखत लम्बे हेरि ॥
देखत लम्बे हेरि छुटके देखि न पावें ।
इत उत दौरे जायँ बहुत मनमें ललचावें ॥
कहते हीरालाल नदी नारा नहिं भटकैं ।
लम्बे जावें पार देखि गहिरो नहिं अटकैं ॥ ८ ॥

ठिगना ।

तुमने यह एकै कही लम्बे देखैं खूब ।
यहौ खबरहै देहकी भागत हौ जिय ऊब ॥
भागत हौ जिय ऊब परें जब पुलिसके सोंटे ।
शिरमें लागैं खूब उपरही ऊपर चोंटे ॥
कहते हीरालाल मजेसे हम तर घुसने ।
देखैं मुच्छैं ऐंठि मार बहु खाई तुमने ॥ ९ ॥

लम्बा ।

खाई हमने मार कब अपने मुँह कहिलेउ ।
मारे लातनके तरे परे दुहाई देउ ॥

परे दुहाई देउ खबर जब हमने पाई ।
तबतौ तुम्है उठाय धरै घसिलाय पठाई ॥
कहते हीरालाल लाज तुमको नहिं आई ।
ऐसि दशा ह्वै जाय मार फिर किसने खाई ॥१०॥
ठिगना—आई ठिगनेको हँसी बोला फिर मुसकाय।
खबरि एक दिनकी करो कहौ देउँ बतलाय ॥
कहौ देउँ बतलाय लगी जब टक्कर सरमें ।
रहै छोट दरवाज घुस्यो जब हरबर घरमें ॥
कहते हीरालाल मूर्च्छा जब तुहिं छाई ।
कढिलाये तब गयो जनौ सुधि वाहे आई ॥ ११॥
लम्बा—हँसी तब लम्बेबात कहि तुहैं न काहूलाज।
झूंठ सांचको ख्याल नहिं देखो अपनो काज ॥
देखो अपनो काज करो सुधि बाग सैरकी ।
ऊंचे फल हम चखैं लखैं नहिं राह गैरकी ॥
कहते हीरालाल तरे तुम झाड़िनमें फँसि ।
बातैं अब जो बहुत करो सो तुमको सब हँसि १२

ठिगना।

पावैं नहीं अघायकै पेटू बड़ो अहार।
तुम्हैं पसेरी रोजही चहिये कहां गुजार॥
चहिये कहां गुजार समुझिदेखो जिय अपने।
पाव भरेमें फूलि उठें हम दुखी न सपने॥
कहते हीरालाल प्रेम अतिही हिय लावे।
मूरति शालग्राम छोटि जो पूजक पावे॥१३॥

लम्बा।

यह सुनि लम्बे फिर कह्यो ऐसीही जो बात।
तौतो लम्बी सागवन साखू कड़ी बिकात॥
साखू कडी बिकात केश लम्बे अति प्यारे।
दाढ़ी लम्बी राख सन्त जे जग ते न्यारे॥
कहते हीरालाल और कुछ नाहीं है धुनि।
बडी उमरकी होय प्रतिष्ठा भारी यह सुनि॥१४॥

ठिगना।

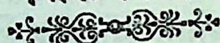
यहिविधि झगडा दोउ करैं अपनी बात बढाय।
कबहूं कोपैं रिस करें कबहूँ दे मुसकाय॥

कबहूँ दें मुसकाय अपनिही बाढ़ि सुनावें ।
प्रेम प्रीतिकी बात हिये एको नहिं पावें ॥
कहते हीरालाल छोडि झगडा कर प्रभु सुधि ।
भजिय श्रीभगवान महासुख आनँदयहिविधि १५

दोहा ।

इन्दु शंभुमुख अंक शशि, संवत विक्रम सार ।
शुक्लत्रयोदशिमासमधु रच्यो सुदिन बुधवार ॥

मोटे पतलेका झगड़ा ।



मोटा ।

कुं०–मोटे पतले दोउमिलि झगडा करैंअपार ।
मोटा कहै पतलिसों सुन रे निर्बल यार ॥
सुन रे निर्बल यार काम जो हमसे होवे ।
सो तू देखि डराय बिना पौरुष यशखोवे ॥
कहिं आतमपरसाद बहुत धिक्कार खसोटे ।
तब दुर्बलकर कोप कहैं सुनरे जडमोटे ॥ १ ॥

मोटे बल बल तू करै मोटा होत गँवार।
मोटी बुद्धि न कामकी मोटी देह तुँदार॥
मोटी देह तुँदार मोट लादै बहु मोटा।
मोटी कहै जु बात कहैं जगमें सब खोटा॥
कहि आतमपरसाद यहांते होवै ओटा।
दांतन ओठ चबाय डपटि बोल्यो फिर मोटा॥२॥

मोटा।

अरे पतीले क्या बकै तुझे न अपनी लाज।
हमहीं यश संग्राममें पावें मान समाज॥
पावें मान समाज करै जो हमसे रारी।
धर फटकारैं ताहि डरे सब बली बिचारी॥
कहि आतमपरसाद बली हम पूत असीले।
तेरी है सब ठौर फजीत अरे पतीले॥३॥

पतला।

हौं तुम मोटे मूढ़ जड़ अपने गर्व भुलान।
मोटी धार न कामकी पतली नोक कमान॥
पतली नोक कमान घाउ जल्दी पहुँचावे।

चलै न पावै दूर वृथा तू देह फुलावै ॥
कहि आतमपरसाद बडे धमधूसर बोटे।
चोटैं सहो न लाज बोंगाते हो तुम मोटे ॥ ४ ॥

मोटा।

पतले क्या हमसे बकै हम हैं बली जवान।
शीत न घामेंको डरैं निर्भय रहैं निदान ॥
निर्भय रहैं निदान नहीं हम कहू सकाते।
आवे कोई ज्वान तिसेही धर लपटाते ॥
कहि आतमपरसाद बली हम योधा विरले।
हमहीं तुम्हैं बचाय करो जब बिनती पतले॥५॥

पतला।

सुन हडबोंगा बात रे काहे आंख दिखाय।
वादी तेरी देहसो फूली है उसुआय ॥
फूली है उसुआय तुझैं आलस दिन राती।
जब तक देह सम्हार चढै हम तेरी छाती ॥
कहि आतमपरसाद बड़ा तू अकखड पोंगा।
बेढब तेरी चाल मुटका सुन हडबोंगा ॥ ६ ॥

मोटा ।

झोंका डोंगर खातही जल्दी गिरै निदान ।
बलफै कौने बूत तू हड्डी मांस सुखान ॥
हड्डी मांस सुखान चलत मूर्छा तुहि आवै ।
सबके रहि आधीन अपन तू प्राण जियावै ॥
कहि आतमपरसाद बली हम फिरैं अशोका ।
राह चलै तू कांख गिरै जब लागै झोका ॥ ७ ॥

पतला ।

नाहक तू जन्मा जगत अपनी हँसी कराय ।
देखै रस्ता तंग जो चलैं बहुत सुकुडाय ॥
चलै बहुत सुकुडाय तुझे गिध श्वान मनावें ।
कबधौं मरै पहाड पेट भरके हम खावें ।
कहि आतमपरसाद मांस मोटेके गाहक ।
कौआ गीध सियार भला तू बलफै नाहक॥८॥

मोटा ।

दोऊ नित झगडा करैं मानैं हार न जीत ।
अपनी अपनी बाढिकहि झगडेलुनकी रीत ॥

झगडेलुनकी रीत नहीं मानैं जड़ मूढा।
है सबका निर्वाह ज्वान बालक अरु बूढा॥
कहि आतमपरसाद करो अभिमान न कोऊ।
निर्वाहक जगदीश सबल निर्बल जगदोऊ॥ ९॥

स्त्री पुरुषका झगड़ा।

स्त्री।

नारीकहैसुनोममस्वामी। आजकल्हकेपूरुषकामी
देखोकुत्तनआनिविचारे।कातिकलगेफिरैंपिछवारे
मर्दनकेकुछहयानशरमा। बैठे रहैं रात दिन घरमा
सुनैंमेहरियनकीचुपबाते।तिनकोबोलोतौ घरखाते

पुरुष।

इतनासुनकैबोलामर्द।कीन मेहरियन दुनियागर्द
धर्मकर्मसबउनहिनहाथ।ज्यहिते चहैं जोडलेसाथ
भागैंनिकसजोधमकीदेउ।अपनोघरदहिजरऊलेउ
हमतो हज्जै कारिबे जाय। तुम बैठे रहो लजाय

स्त्री।

तब नारी सुनि उत्तरदीन।मर्दनकरनीअच्छीकीन

पढ़ि विद्या घूमैं बहु देशन।हमघरभीतर मरैंअँदेशन
तरा तराके चाखैं स्वाद। भूल गये घर झूरा बाद
चहै मेहरिया करै उपास।अपनावही बनरसीखास

पुरुष ।

सुनते पुरुषकहै फिरलाग। जहँचाहोतहँबारोआग
जरै बरै नारिन के बोल । बेंचत फिरैं लडाई मोल
कलहतो नारिनवाँटपड़ीहै।सुलहयहीतेअलगखड़ीहै
नारी एक पुराने न्यारो। जाकरलिखाटरैंनहिंटारो।

स्त्री ।

यह सुनि नारी बोलीबैन । मर्दनके विष घोरे नैन
हमैं तो राखैं घरके भीतर।अपनाफिरैंबटैरन तीतर
मेला देखें नित्तनवीन। मेहरीका सब गहना छीन
कहूँ देख जो पावैं नारि। मानो मिले पदारथचारि

पुरुष ।

तबपूरुषबोलाखिसिआय।नारिनकथाकहीनहिंजा
य।गये विधाता मनते हारि।सेवी परिहैजगमाँनारि
चितै देतजो नैनउघार।मानोलीन्हेसिजीवनिकार
टोनाटटका भरे हजारन । लडबैठैंसबतुम्हरेकारन

स्त्री ।

नारीते चुप रहो नजाय । तुरतैबोली बात बनाय
पुरुषनकाचितमहाकठोर । हमैंलगावतनाहकखोर
तनमन गोपिन सबदैदीन।तबहूं न हरि भयेअधीन
सीता तनकौ पाप न कीन। रामचन्द्र वनबासेदीन

पुरुष ।

तब उत्तर फिर पूरुष दीन। प्रेमपरीक्षानारिनलीन
तुम्हरे हृदय रहै नहिं बात।याहीतेकछुकहोनजात
आपनमतलबतुम्हौंपियार।काजानोदुखऔरेक्यार
जोपैनारिनहोतअकच्छी ।तौबेशकसबकहतेअच्छी
नारि धर्महैपतिकोमान। पतिहिछांडनहिंदूजोजान
पतिकोचहीनारिसोंप्रीत।हिलिमिलदोनोंरहोसुनीत
परंपराका है यह धर्म ।हावभाव करि बूझो मर्म ॥
आतमझगडादेउनिवार ।कारणयहीपरमसुखसार ।

इति झगड़ापंचक समाप्त ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

